राष्ट्रीय एकता की कडी : देवनागरी

- प्रा.डॉ.श्रीमति अकिला शेख,
प्रमुख, हिन्दी विभाग.

भाषा मानव मात्र के विचार-विनिमय का प्रमुख साधन है और लिपि भाषा का लिखित और मूर्त रुप है। उसी के द्वारा भाषा को पूर्णता और स्थिरता प्राप्त होती है । लिपि मानव की आवश्यकताओं की उपज है। प्रत्येक लिपि का अपना विशेष महत्व और उपादेयता है । प्रत्येक विकासशील देशमें उसकी एक राष्ट्रभाषा और उसकी एक लिपि होती है और होनी ही चाहिए।

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और 'देवनागरी' राष्ट्रलिपि । भारत की आधुनिक लिपियों में देवनागरी प्रचार प्रसार की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है । इसका प्रचलन पश्चिम में राजस्थान से पूर्व में बिहार तक तथा उत्तर में हिमालय के प्रदेशों से मध्य प्रदेश की निचली सिमा तक है। उसी प्रकार महाराष्ट्र में मराठी के लिए देवनागरी को ही अपनाया गया है । गुजराती, बंगला, गुरुमुखी आदि लिपियाँ देवनागरी के ही कुछ परिवर्तित रूप हैं । इनमें बहुत समानता हैं । अतः गुजरात, पंजाब और बंगाल इन क्षेत्रों के लोगों को देवनागरी सीखने में कोई दिक्कत नहीं हो सकती। दक्षिण में संस्कृत देवनागरी में ही लिखी जाती है । वहाँ संस्कृत का प्रचार अधिक है । इस प्रकार दक्षिण में देवनागरी जाननेवालों की संख्या भी अधिक है।

भारत की अन्य भाषाएँ यदि देवनागरी को अपनाए तो वह देश के संपर्क की राष्ट्रीय एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी बनेगी। एक दुसरे के भावों, विचारों और साहित्य को समझने में सुविधा होगी। विभिन्न भारतीय भाषाओं को सिखने में सुविधा होगी । देवनागरी को अपनाने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि अन्य लिपियों का अवमान हो रहा है । नागरी लिपि सबसे प्राचीन है और भारत के अधिकांश भाग में प्रयुक्त होती है। वह एक श्रेष्ठ और वैज्ञानिक लिपि है । सभी भारतीय लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से ही हुवा है। अतः देवनागरी को देश की सामान्य लिपि के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।

आज़ादी से पूर्व भी इस बात को बार बार उठाया गया था कि भारत की विभिन्न भाषाएँ देवनागरी में ही लिखि जाए। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि लगभग सौ वर्ष पूर्व जिस एक लिपि की बात उठाई गई थी उसी की चर्चा आज भी करने की आवश्यकता महसूस हो रही है। आज भी संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने का कार्य एक राष्ट्रभाषा और एक राष्ट्रलिपि ही कर सकती है । उस समय स्वामी दयानंद सरस्वती, बंकिमचंद्र चैटर्जी, रवींद्रनाथ ठाकुर, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, पंडित नेहरू आदि नेताओं ने इस बात को जान लिया था । बापूजी ने देवनागरी के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था - ''हम जो राष्ट्रीय एकता हासिल करना चाहते हैं उसकी खातिर देवनागरी को सामान्य लिपि स्विकार करना आवश्यक है । इसमें कोई कठिनाई नहीं । बात सिर्फ यह है कि सब अपनी प्रान्तीयता और संकीर्णता छोड दे ।'' इसी प्रकार के विचार उन्होंने *यंग इंडिया* (२७-८-१९२५) में व्यक्त करते हुए लिखा है - ''किसी गुजराती का गुजराती लिपि से चिपटे रहना अच्छी बात नहीं है। प्रान्तप्रेम वहाँ अच्छा है जहाँ वह अखिल भारतीय देशप्रेम की बड़ी धारा को पुष्ट करता है । इसी प्रकार अखिल भारतीय प्रेम भी उसी हद तक अच्छा है, जहाँ तक वह विश्व प्रेम के और भी बडे लक्ष की पूर्ति करता है । परन्तु जो प्रान्तप्रेम यह कहता है कि ''भारत कुछ

What would the science of language be without missions. - *Max Muller*

अगस्त्य

नहीं, गुजरात ही सर्वस्व है'' वह बुरी चीज़ है। ..... मैं मानता हूँ कि इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देने की ज़रुरत नहीं कि देवनागरी ही सर्व-सामान्य लिपि होनी चाहीए, क्योंकि उसके पक्ष में निर्णायक बात यह है कि उसे भारत के अधिकांश भाग के लोग जानते है। ..... जो वृत्ति इतनी वर्जनशील और संकीर्ण हो कि हर बोली को चिरस्थायी बनाना और विकसित करना चाहती हो, वह राष्ट्र-विरोधी और विश्व-विरोधी है। मेरी विनम्र सम्मति में तमाम अविकसित और अलिखित बोलियों का बलिदान करके उन्हें हिन्दुस्थानी की बड़ी धारा में मिला देना चाहिए। यह आत्मोत्कर्ष के लिए की गई कुरबानी होगी, आत्महत्या नहीं। अगर हमें सुसंस्कृत भारत के लिए एक सामान्य भाषा बनानी हो, तो हमें भाषाओं और लिपियों की संख्या बढ़ानेवाली या देश की शक्तियों को छिन्न-भिन्न करने वाली किसी भी क्रिया का बढ़ना रोकना होगा। हमें एक सामान्य भाषा की वृध्दि करनी होगी।''

गांधीजी ने अनेक लिपियों का होना देश के लिए बाधक माना है। इसीलिए जिन राज्यों में नागरी लिपि का प्रयोग नहीं होता उनके द्वारा इसे अपनाना, उसे सीखना, उसका प्रयोग करना एक त्याग होगा, जो राष्ट्रीय एकता के हित में होगा। देश का विकास कोई एक क्षेत्रिय भाषा अथवा कोई एक क्षेत्रिय लिपि नहीं कर सकती। इसलिए संपूर्ण देश के परस्पर व्यवहार के लिए एक भाषा हिन्दी और एक लिपि-देवनागरी-आवश्यक है। आज़ादी के साठ वर्षों बाद भी हमारे यहाँ राष्ट्रभाषा की जो स्थिति है वही राष्ट्रलिपि की है। वस्तुतः राष्ट्रलिपि तभी राष्ट्रलिपि कहलायी जा सकती है जब राष्ट्र के सभी स्तरों पर उसका प्रयोग आरंभ हो जाए तथा सभी राज्य उसे स्वीकार कर ले और अपने कामकाजों में उसी का प्रयोग करें, और हिन्दी राष्ट्रभाषा वास्तविक अर्थों में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हो। शासन को इस दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए। समय रहते ही देवनागरी की व्यापकता को देखते हुए उसे अपना लेना चाहिए। केंद्र सरकार और राज्यसरकारें अपना कामकाज और व्यवहार राष्ट्रलिपि में ही करें। संसद में उसका प्रयोग हो। इससे देश में उसके व्यवहार के लिए विशेष अनुकूल वातावरण तैयार हो सकता है। यह कार्य सरकारी स्तर पर सहज सम्भव होगा। इस उद्देश्य की संपूर्ति के लिए आवश्यक उपाय सरकार को करने चाहिए। सरकारी आदेशों के बावजूद भी अगर नागरी की अवहेलना होती है तो वहाँ कुछ सख्ती से काम लेना चाहिए। जिन भाषाओं का कोई लिखित रूप नही है उसके लिए देवनागरी का ही प्रयोग होना चाहिए। भारत की लिपि रहित जनजातीय बोलियों के लिए इसे तुरंत अपना लेना चाहिए। नागरी प्रचारिणी सभा काशी की स्थापना के समय (सन १८१३ में) डॉ. श्यामसुंदर दासजी ने कहा था - ''यदि एक बार रोमन अक्षरों का प्रचार हो गया तो फिर देवनागरी के अक्षरों के प्रचार की आशा करना व्यर्थ होगा।'' हमें इस बात को हमेशा ही ध्यान में रखना होगा।

कुछ लोग भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि को स्विकारने की बात करते है। भाषा भारतीय, और लिपि रोमन! यह बात हमारी मानसिक गुलामी को ही व्यक्त करती है। हमारी सार्थक और वास्तविक आत्माभिव्यक्ति हमारी ही लिपि में हो सकती है। हमारी अपनी भाषा और लिपि इतनी समृध्द है कि हमें विदेशी लिपि सीखने की आवश्यकता नहीं है.... हमें अपनी लिपि को और अधिक समृध्द और वैज्ञानिक बनाने कि दिशा में प्रयत्न करने चाहिए। प्रेस, टाईपरायटर, कॉम्प्यूटर, आदि की दृष्टि से उसमें सुधार और सुविधा के लिए प्रयत्न करने चाहिए। क्षेत्रियता से उठकर राष्ट्रीयता के संदर्भ में सोचना चाहिए। समय-समय पर भारत सरकार की ओर से नियुक्त समितियों द्वारा लिपि के संदर्भ में जो सुझाव प्रस्तुत किए गए है उन्हें तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिए। नागरी के दोषों को जब बताया जाता है तब यह जान लेना चाहिए कि विश्व की अन्य लिपियों के साथ भी बहुत सारे दोष जूडे हुए हैं। उनकी तुलना में यह निश्चित ही श्रेष्ठ और सरल है। अगर कुछ वर्णो को बढ़ा लिया गया तो नागरी लिपि सभी भारतीय भाषाओं को लिख सकेगी। विश्व की अन्य कुछ भाषाओं के लिए भी वह उपयुक्त होगी।

A man who is ignorant of foreign languages is ignorant of his own. - Goethe.

विनोबाजी के विचार में चीनी, जापानी आदि भाषाओं के लिए नागरी लिपि अत्यंत सरल है। विनोबाजी के विचार हमारे लिए आज भी उतने ही ग्राह्य है जितने उस समय थे। उन्होंने कहा था - ''भिन्न-भिन्न प्रदेश के उत्तम साहित्य का परिचय जितना एक दूसरे को अधिक होगा उतने लोगों के हृदय एक दूसरे से जूडेंगे। इस समय इस विशाल देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए हमारे पास कोई कड़ी नहीं है। इसलिए मैं कहता हूँ कि संपूर्ण देश में एक लिपि चले तो एकता की दशा में यह पहला कदम होगा।''

विनोबाजी के इन विचारों से प्रेरित होकर हमें राष्ट्रलिपि-देवनागरी को अपनाना चाहिए। वह राष्ट्रीय एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। राष्ट्र में राष्ट्रगीत और राष्ट्रभाषा के समान ही राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का सम्मान होना चाहिए।

अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य अगस्त्य

२१ वीं शताब्दी की लेस जिंदगी

हमारा संवाद	-	*वायरलेस*
हमारा कामकाज	-	*कॅशलेस*
हामारा काम	-	*एफर्ट लेस*
हमारी श्रध्दा	-	*गॉडलेस*
हमारा खाना	-	*फॅटलेस*
हमारे रिश्ते	-	*लव्ह लेस*
हमारी वृत्ति	-	*केअरलेस*
हमारी भावना	-	*हार्ट लेस*
हमारी राजनीती	-	*शेमलेस*
हमारे दोष	-	*काउंटलेस*
हमारे वाद	-	*बेसलेस*
हमारे युवक	-	*जॉबलेस*
हमारी जिंगदी	-	*मिनिंगलेस*

- कु. नीलिमा लोटे,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

क्या आप जानते हैं ?

१. हिंदी का प्रथम उपन्यास -
२. हिंदी का प्रथम समाचार पत्र -
३. प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला -
४. एम्. ए. का. सर्वप्रथम शिक्षण प्रारंभ हुआ -
५. हिंदी साहित्य परिषद के प्रथम अध्यक्ष -
६. हिंदी की आदि कवयित्री -
७. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ -
८. प्रेमचंद की प्रथम कहानी -
९. हिंदी के सर्वप्रथम गीत लेखक -
१०. दिल्ली विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम पी. एच. डी -
११. हिंदी का प्रथम बडा महाकाव्य -
१२. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति -
१३. हिंदी का आधुनिक सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य -
१४. रागदरबारी उपन्यास के लेखक का नाम-
१५. कितने पाकिस्तान उपन्यास के लेखक का नाम -

-: उत्तर :-

१. परीक्षा गुरु (श्री निवास दास)
२. उदंत मार्तण्ड (३० मई, १८२६ ई)
३. जी. शंकर कुरुप को
४. काशी विश्व विद्यालय में
५. पुरुषोत्तमदासं टंडन
६. मीराबाई
७. नागपुर में १९७५ ई.मे.
८. पंचपरमेश्वर (१९१६ ई.)
९. विद्यापति
१०. विमलकुमार जैन ११. पद्मावत
१२. गोदान १३. कामायनी
१४. श्रीलाल शुक्ल १५. कमलेश्वर

- दिगंबर मोहिते,
एम्. ए. (हिन्दी)

दोस्ती

सूरज की पहली किरन,
निकले पूरब से
वह भी ढल जाती है।
फुलों की सुंदर पंखुडियाँ,
निकले कलियों से
वह भी झर जाती है।
बन में लगी अग्नि,
बने भयानक, पर
वह भी बूझ जाती है।
बादलों से बरस कर
बरसात का पानी
वह भी बह जाता है
पर,
तेरे जनम दिन के
ये सुनहरे पल
कभी न ढले
हमारी दोस्ती और साथ
कभी न टूटे, कभी न छूटे!

-कु. नीता गायकवाड,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

कर्ज़

नदी को उसके पावित्र्य की साक्ष्य
कोई नहीं पूछ सकता
महासागर के पानी को
कोई नहीं नाप सकता
माँ-बाप के परिश्रमों की,
उनके वात्सल्य की बराबरी
कोई नहीं कर सकता
माँ-बाप के एहसानों का कर्ज
कोई नहीं चुका सकता
उनके मन की गहराई
कोई नहीं नाप सकता
उनके एहसानों का कर्ज
कोई नहीं चुका सकता!
कोई नहीं चुका सकता!!

- कु. नीलिमा लोटे,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

क्या आप जानते है?

कवि दिनकर

☐ सन १९७३ में उर्वशी रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित। ☐ यह पुरस्कार पानेवाले पंतजी के बाद हिंदी के दुसरे व्यक्ति। ☐ भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित। ☐ कुरुक्षेत्र पर उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कार (सन १९५० में)। ☐ कुरुक्षेत्र पर नागरी प्रचारिणी सभा द्वार द्विवेदी पदक (१९५० में)।

- महेश पारधी,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

That friendship will not continue to the end which is begun for an end. - *Quarles.*

कविता लिखना

कॉलेज में सूचना लगी थी
अगस्त्य के लिए कविता मँगाई थी
मुझे कुछ नहीं आता था
फिर भी मैं कविता लिखना चाहता था !
मेरे क्लास में एक हसीना थी
मेरा दिल उस पर फिदा था
दिल ने कहा उस पर ही कुछ लिखूँ !
क्यों कि कॉलेज में सूचना लगी थी
अगस्त्य के लिए....
मेरे सामने एक सुंदर दृश्य था
दिल ने कहा उस पर ही कुछ लिखूँ
पर गौर से देखा
वह दृश्य नहीं पर्दा था !
कॉलेज मे सूचना .....
अगस्त्य .....
कविता लिखकर मुझे निराला बनना था,
ज्ञानपीठ से सम्मानित होना था
दिल ने कहा तू कवि नहीं बन सकता
कवि बनता नहीं, पैदा होता है
हाँ ! सच ही है, कवि बनता नही, पैदा होता है,
कॉलेज में सूचना लगी थी
अगस्त्य के लिए कविता मँगाई थी !

- प्रदीप आभाळे,
द्वितीय वर्ष, कला (राज्यशास्त्र)

कुछ काम की बातें

१. **एक साल का महत्व -**
परीक्षा में असफल होने वाले विद्यार्थी से पूछो !

२. **एक मास का महत्व -**
३० दिन काम करने के बाद भी वेतन न पानेवाले मज़दूर से पूछो !

३. **एक दिन का महत्व -**
साक्षात्कार का पत्र एक दिन लेट मिलने वाले बेकार से पूछो !

४. **एक घंटे का महत्व -**
परीक्षा हॉल मे एक घंटा देर से पहुँचने वाले विद्यार्थी से पूछो !

५. **मिनिट का महत्व -**
एक मिनट की देरी के कारण रेल छूट जानेवाले प्रवासी सें पूछो !

६. **सेकंद का महत्व -**
ऑलंपिक में दुसरे क्रमांक पर आने वाले धावक से पूछो !

७. **ममता का महत्व -**
माँ से पूछो !

- कु. अश्विनी चौधरी,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

You will not find poetry nowhere, unless you bring some with you. - *Joubert*

वीर जवान का संदेश

हे साथी ! घर मेरे यह संदेश पहुँचा देना।
मुहँ से किसी से कुछ न कहना
इशारों से सब समझा देना।

हाल जो मेरे पिताजी पूछे
तो घर का जलता दीप बुझा देना।

हाल जो मेरी माताजी पूछे
तो सूनी गोद दिखा देना।

हाल जो मेरे भैय्या पूछे
तो कटा दाहिना हाथ दिखा देना।

हाल जो मेरी बहना पूछे
तो राखी वापस लौटा देना।

हाल जो मेरी बीबी पूछे
तो माँग का सिंदूर मिटा देना।

हाल जो मेरा बेटा पूछे
तो खून से रंगी ये वर्दी दिखा देना।

हाल जो मेरी बेटी पूछे
तो घर का चुल्हा बुझा देना।

हाल जो मेर गाँव वाले पूछेंगे
भारतमाता की आन और
तिरंगे की शान दिखा देना।

हाल जो मेरे गुरुजन पूछे
२६ जनवरी को मिला सम्मान दिखा देना।
हे साथी ! घर मेरे यह संदेश पहुँचा देना !!

- संतोष शेटे,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

कुछ परिभाषाएँ

१. **पडोसी -**
आपकी आपसे ज्यादा जानकारी देनेवाला नारद !

२. **फॅशन -**
दर्जी की गलती !

३. **विद्यार्थी -**
परीक्षा देवी का सबसे लाडला पूत्र !

४. **ईश्वर -**
किसी के भी सामने न आनेवाला मॅनेजर !

५. **स्मशान -**
धरती पर इंसान का आखरी स्टेशन !

६. **वकील -**
गुनाहगारों का भगवान !

७. **रोगी -**
एक ऐसी आग, जिस पर डॉक्टर की रोटी बनती है !

८. **शादी -**
जवानों की ऐसी गलती, जिसे करने पर लोग बधाई देते हैं !

९. **अनुभव -**
इंसान ने अपनी गलतियों को दिया हुआ सुंदर नाम !

१०. **ऑफीस -**
एक ऐसी जगह जहाँ हम घर की समस्याएँ भूल जाते है !

११. **कॉन्फरंस हॉल -**
जहाँ वक्ता बोलता है पर कोई सुनता नहीं !

१२. **डॉक्टर -**
आपके ill को Pill से दूर करता है ! आपको Bill से मारता है !

१३. **बॉस -**
जब आप जल्दी जाते है तब देर से आता है और आप देर से जाते है तब जल्दी आता है !

- कु. गायकवाड नीता,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

उन्नति

स्वर्ग में चल रही थी
काँग्रेस की मिटींग,
बापू , नेहरु, इंदिरा, संजय थे वहाँ
बापू थे अध्यक्ष,
सोच रहे थे,
भारत की उन्नति कैसी हो ?
तभी अचानक वहाँ राजीवजी पधारे
उन्हें देख बापू बोले
आओ बेटा ! इतनी जल्दी आ गए ?
खैर ! भारत की उन्नति के बारेमें बताओ
राजीवजी प्रणाम कर बोले
उन्नति तो बहुत हुई थी !
आपको यहाँ भेजा था
आपकी प्यारी जनता ने,
'देशी कट्टे' से
हमारी पूज्य जननी को यहाँ भेजा था
हमारी प्यारी जनता ने 'मशीन गन' से
मुझे यहाँ भेजा हमारी प्यारी जनता ने
दुनिया में बने पहले मानवी बम से
बस बापू !
यही उन्नति है हमारी,
यही उन्नति है हमारी !

- मिलिंद घुले
प्रथम वर्ष, कला (हिन्दी)

सबका शुक्रिया

सागर से उठती लहरों का
बहती हुई इन नदियों का
निले आकाश के साथ का
श्वेत श्याम बादलों का
बरसती बुंदों का
मिट्टी की सुगंध का
बीज से निकले नन्हें अंकूर का
हवा के झोंकों पर नाचते पत्तों का
फूलों के रंगो ओर सुरभि का
तारों के इशारों और चांदनी का
इन सब के माध्यम से
दर्शन देने वाले उस रब का
शुक्रिया, शुक्रिया, शुक्रिया !

- कु. रंजना ढोकळ,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

सात सुख

पहला सुख - निरोगी काया
दुसरा सुख - घर में ही माया
तिसरा सुख - पवित्र नारी
चौथा सुख - पुत्र अधिकारी
पाँचवा सुख - पडोसी का खयाल
छठा सुख - राज में मान
सांतवा सुख - स्वर्ग में स्थान

- अभिजीत गंभिरे,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

The good life is one inspired by love and guided by knowledge. - *Bertrand Russell.*

डेवलपमेंट

देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है।
बेईमान भी परमनंट हो रहा है।
ईमानदार सस्पेंड हो रहा है।
देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है
आज का हर काम अंडरवर्ल्ड से हो रहा है।
पैसेवाले का हर काम अर्जंट हो रहा है
गरीब बेचारा सर्व्हंट हो रहा है।
डॉक्टर का यह कैसा ट्रिटमेंट ?
स्वस्थ आदमी पेशंट हो रहा है।
नोकरी में यह कैसा रिक्रुटमेंट ?
भाई भातिजे का ही अपॉईंटमेंट हो रहा है
देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है ।।

- अभिजीत गंभिरे,
तृतीय वर्ष, कला (हिन्दी)

तीन महत्त्वपूर्ण बातें

तीन बातें किसी का इंतजार नही करती -
समय, ग्राहक और मौत।

तीन बातें निकलने के बाद वापस नहीं आती-
तीर- कमान से, बात - जबान से और प्राण - शरिर से।

तीन बातों से बचने का प्रयत्न करो -
बुरी संगत, स्वार्थ और निंदा।

तीन बातों से मन लगाने से उन्नति होती है
ईश्वर, मेहनत और विद्या।

तीन बातों का सम्मान करो
माता, पिता और गुरु।

- अभिजीत गंभिरे,
तृतीय वर्ष, कला (हिंदी)

यादें

आँखों से आँसू बहाकर
दिल का ये दर्द सहकर
तुम्हारी तस्वीर दिल में बिठाकर
नजरों में तुम्हें छुपाकर
रोता है दिल बार बार
करता रहता हुँ तुम्हारा इंतजार
ख्वाबों में तुम आती हो
दिल में तुफान मचाती हो
हर वक्त हमें रुलाती हो
तुम बार बार क्यों याद आती हो ?
तुम बार बार क्यों याद आती हो ?

- आसिफ शेख,
द्वितीय वर्ष, कला.

☯ परमात्मा का सेवक ☯

''एक राजा ने एक गुलाम खरीदा। उन्होंने गुलाम से पूछा,''तेरा नाम क्या है ?'' उसने उत्तर दिया। ''हुजूर जिस नाम से पुकारें वही मेरा नाम होगा।'' राजा ने फिर पूछा, ''तू क्या खाएगा और पहनेगा ?'' उसने कहा, ''हुजूर जो खिला दें और जो पहनने को दें।'' राजा ने पूछा, ''तू क्या काम करेगा ?'' गुलाम बोला, ''जो आप कराएँ।'' तब राजा ने पूछा, ''आखिर तू चाहता क्या है ?'' उसने कहा, '' हुजूर, गुलाम की क्या कोई चाह होती है ?'' राजा ने गद्दी से उतरकर उसे सीने लगाकर कहा, '' मैं तुमको आजसे अपना गुरू मानता हूँ, तुमने मुझे बतला दिया है कि परमात्मा का सेवक कैसा हो ? ईश्वर के प्रति समर्पित/सच्चे भक्त की अपनी कोई निजी इच्छा नहीं रहनी चाहिए।'' - संपादक.

साधारण लोग अपने बुराईका दोषी दुसरेको ठहराते हैं, आत्मज्ञानी स्वयम् को ; विशेष ज्ञानी किसीको नही ॥